एकादश माला, खंड 2, अंक 6

सोमवार, 10 जून, 1996
20 ज्येष्ठ, 1918 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी संस्करण

पहला सत्र – भाग दो
(ग्यारहवीं लोक सभा)

(खण्ड 2 में अंक 6 से 8 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्यः पचास रूपये

लोक सभा के दिनांक 10 जून, 1996 के

वाद-विवाद (हिन्दी संस्करण) का शुद्धि पत्र

.....

कॉलम	पंक्ति	के स्थान पर	पढ़िए
9	नीचे से 10	परोदृश्य	परिदृश्य
18	19	कोन शिला	कोण-शिला

सम्पादक मण्डल

श्री सुरेन्द्र मिश्र
महासचिव
लोक सभा

श्रीमती रेवा नैयर
संयुक्त सचिव
लोक सभा सचिवालय

श्री प्रकाश चन्द्र भट्ट
मुख्य सम्पादक
लोक सभा सचिवालय

श्री केवल कृष्ण
वरिष्ठ सम्पादक

श्री देवेन्द्र कुमार
सम्पादक

श्रीमती सरिता नागपाल
सहायक सम्पादक

श्री मुन्नी लाल
सहायक सम्पादक

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जावेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जावेगा।)

विषय-सूची

एकादश माला, खंड 2, पहला सत्र-भाग दो, 1996/1918 (शक)
अंक 6, सोमवार, 10 जून, 1996/20 ज्येष्ठ, 1918 (शक)

विषय	कालम
सदस्यो [illegible] गए [illegible]	1
निधन संबंधी उल्लेख	
पूर्व राष्ट्रपति डा. नीलम संजीव रेड्डी तथा पांच पूर्व संसद सदस्यों का निधन	1—20
श्री एच. डी. देवेगौड़ा	5—6
श्री अटल बिहारी वाजपेयी	6—8
श्री पी.वी. नरसिंह राव	8—10
श्री सोमनाथ चटर्जी	10
सरदार सुरजीत सिंह बरनाला	10—12
श्री चित्त बसु	12—13
श्री सुरेश प्रभु	13
श्रीमती गीता मुखर्जी	13—14
श्री जी.एम. बनातवाला	14
श्री सनत कुमार मंडल	14
श्री एन.वी.एन. सोम्यू	15
श्री माधवराव सिंधिया	15—16
श्री नारायणदत्त तिवारी	16—17
श्री रमाकांत डी. खल्लप	17—18

लोक सभा

सोमवार, 10 जून, 1996/20 ज्येष्ठ, 1918 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

[अनुवाद]

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण

श्री बोम्मागानी धर्मभिक्षम (नालगोंडा)

श्री गुलाम रसूल कार (बारामूला)

श्री जी.एम. मीर मगामी (श्री नगर)

श्री मोहम्मद मकबूल दर (अनंतनाग)

श्री पी. नामडयाल (लद्दाख)

प्रो. चमन लाल गुप्ता (ऊधमपुर)

श्री मंगत राम शर्मा (जम्मू)

श्री शिवानंद हेमप्पा कौजलगी (बेलगाम)

पूर्वाह्न 11.10 बजे

निधन संबंधी उल्लेख

पूर्व राष्ट्रपति डा. नीलम संजीव रेड्डी तथा पांच पूर्व संसद सदस्यों का निधन

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, मुझे भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा. नीलम संजीव रेड्डी और पांच अन्य पूर्व साथियों अर्थात् सर्वश्री राम चरण, वाल्मीकि चौधरी, डी.डी. पुरी, पी.ए. एंटनी और विजय पाल सिंह के निधन की सूचना देते हुए अति दुख हो रहा है।

डा. नीलम संजीव रेड्डी भारत के एक महान सपूत थे और उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। वह देश के सामाजिक-राजनीतिक जीवन में पचास वर्ष से अधिक समय तक छाए रहे। आजादी की लड़ाई में वह कई बार जेल गए।

वह 1931 से अपने गृह राज्य, आंध्र प्रदेश, के राजनीतिक मामलों से सक्रिय रूप से जुड़े रहे थे। वह 1946 में मद्रास विधान सभा के सदस्य बने और 1947 में संविधान सभा के सदस्य बने। वर्ष 1949-51 के दौरान मद्रास राज्य सरकार में मंत्री रहे और कई महत्वपूर्ण मंत्रालयों का कार्यभार सम्भाला। वह 1953 में अपने मूल राज्य आंध्र प्रदेश में उप मुख्य मंत्री बने और 1956 तथा 1962-64 के दौरान वह मुख्य मंत्री रहे। वर्ष 1964-67 के दौरान वह केन्द्रीय मंत्री परिषद में इस्पात और खान, परिवहन, विमानन, नौवहन और पर्यटन मंत्री भी रहे।

वर्ष 1952 और 1964-67 के दौरान डा. रेड्डी राज्य सभा के सदस्य रहे। तत्पश्चात्, वर्ष 1967 में चौथी लोक सभा के सदस्य बने और अध्यक्ष निर्वाचित हुए। वह वर्ष 1969 तक अध्यक्ष पद पर आसीन रहे। डा. रेड्डी एक अति संवेदनशील सांसद थे। उनकी संसदीय संस्थाओं में गहरी आस्था थी और उन्होंने पीठासीन अधिकारी के रूप में अपने निर्णयों और विनिर्णयों के द्वारा विशिष्ट योगदान किया।

उन्होंने अनेक देशों की यात्रा की और कई देशों के दौरे पर गए, विभिन्न संसदीय शिष्टमंडलों का नेतृत्व भी किया। वर्ष 1977 में वह पुनः छठी लोक सभा के लिये निर्वाचित हुए और छठी लोक सभा के उसी वर्ष पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। परन्तु, उनके भाग्य में तो सर्वोच्च पद पर आसीन होना लिखा ही था।

जुलाई, 1977 में भारत के राष्ट्रपति के रूप में उनका निर्वाचन उनके लम्बे और विशिष्ट सार्वजनिक जीवन का चरमोत्कर्ष था। उन्होंने अपनी प्रशासनिक कुशाग्रता से इस उच्च पद की गरिमा बढ़ाई। उन्होंने आम आदमी के रूप में अपने जीवन की शुरूआत की थी और अपने सम्पूर्ण सार्वजनिक जीवन में जनता के कल्याण के प्रति वचनबद्ध बने रहे। उन्होंने उस समय की कठिन तनावपूर्ण प्रशासनिक और राजनीतिक स्थितियों में अपनी दूरदर्शिता, अंतर्निहित गुणों और संतुलन का परिचय दिया था।

उन्होंने अपनी कार्य प्रणाली और अनौपचारिकता से सभी को प्रभावित किया था। भारत के राष्ट्रपति पद से सेवानिवृति के उपरान्त भी वह कठिन स्थितियों में बुद्धिमतापूर्ण सलाह देते रहे, जो कि प्रकाशस्तम्भ की तरह होती थी।

उनका नाम भारत के राजनीतिक और संसदीय इतिहास में सदा दीप्तिमान रहेगा।

डा. रेड्डी का 1 जून, 1996 को 83 वर्ष की आयु में बंगलौर में निधन हो गया। उनके निधन से भारत ने एक उत्कृष्ट राजनेता, एक विशिष्ट स्वतंत्रता सेनानी, सच्चा लोकतांत्रिक, सक्षम सांसद और इसके अलावा एक सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति को खो दिया है। हालांकि, डा. रेड्डी अब हमारे बीच नहीं रहे हैं परन्तु उनकी यादें आने वाले कई वर्षों तक हमारे बीच बनी रहेंगी।

श्री राम चरण ने चौथी लोक सभा में 1967 से 1970 तक उत्तर प्रदेश के खुर्जा संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था।

श्री राम चरण एक समर्पित राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ता थे और श्रमिकों के कल्याण से जुड़े विभिन्न संगठनों से संबद्ध थे। उन्होंने समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान के लिये अथक प्रयास किये थे।

श्री राम चरण का 15 मार्च, 1996 को नई दिल्ली में 70 वर्ष की आयु में निधन हो गया था।

श्री वाल्मीकि चौधरी ने 1967-70 के दौरान चौथी लोक सभा में हाजीपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था।

श्री चौधरी एक सक्रिय सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता थे और उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों के विकास तथा समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान के लिये काफी प्रयास किये थे। वह खादी और ग्रामोद्योग आयोग के सदस्य रहे थे।

श्री चौधरी, डा. राजेन्द्र प्रसाद के निकट सहयोगी थे और स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया था। वह कई बार जेल गए और 1942-45 तक जेल में रहे।

श्री वाल्मीकि चौधरी एक सक्रिय लेखक थे और उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं जिनमें महत्वपूर्ण हैं राजेन्द्र बाबू का व्यक्तित्व, राष्ट्रपति भवन की डायरी, अजात शत्रु इत्यादि।

श्री वाल्मीकि चौधरी का 75 वर्ष की आयु में 28 मार्च, 1996 को नई दिल्ली में निधन हो गया था।

श्री डी.डी. पुरी ने तीसरी लोक सभा में 1962-67 के दौरान अविभाजित पंजाब के कैथल संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था।

इसके पूर्व 1952-62 के दौरान वह पंजाब विधान सभा के सदस्य रहे थे।

वह एक समर्पित सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता थे और उन्होंने दलितों के उत्थान के लिये अथक प्रयास किये। श्री पुरी एक जाने माने उद्योगपति थे और उन्होंने वर्ष 1956 में न्यूयार्क में हुए संयुक्त राष्ट्र चीनी सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया था और जेनेवा में 1958 तथा 1961 में हुए सम्मलेनों में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया था। उन्होंने ईरान के दौरे पर गए कई व्यापारिक शिष्टमंडलों और 1961 में पाकिस्तान के दौरे पर गए शिष्टमंडल का नेतृत्व किया था।

वह एक सक्षम सांसद थे और उन्होंने श्रमिकों की कठिनाइयों की तरफ सभा का ध्यान आकृष्ट करने का कोई भी अवसर नहीं खोया।

श्री डी.डी. पुरी का 82 वर्ष की आयु में 22 अप्रैल, 1996 को लंदन, ब्रिटेन में निधन हो गया था।

श्री पी.ए. एंटनी ने 1984-89 और 1989-91 के दौरान आठवीं तथा नौवीं लोक सभा में केरल के त्रिचूर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था।

इसके पूर्व वह 1972-77 तक केरल की विधान सभा के सदस्य रहे थे। श्री पी.ए. एंटनी एक जाने माने राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ता थे। उनकी समाज के कमजोर वर्गों में शिक्षा के प्रसार के प्रति गहरी रूचि थी।

श्री एंटनी एक सक्रिय सांसद थे। उन्होंने सरकारी आश्वासनों संबंधी समिति, वाणिज्य मंत्रालय की सलाहकार समिति, राजभाषा समिति, सभा पटल पर रखे गए पत्रों संबंधी समिति और विदेश मंत्रालय की सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में भी कार्य किया था।

श्री पी.ए. एंटनी का 60 वर्ष की आयु में 24 अप्रैल, 1996 को चालाकुडी में निधन हो गया था।

श्री विजय पाल सिंह ने पांचवीं लोक सभा में 1971-77 के दौरान उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था।

इसके पूर्व 1952-59 और 1962-67 के दौरान वह उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे।

वह पेशे से कृषक थे और कृषकों के कल्याण से जुड़े विभिन्न संगठनों से विभिन्न क्षमताओं में संबद्ध थे।

श्री सिंह ने दलितों में उनके अधिकारों के प्रति जागृति पैदा करने के लिये भरपूर प्रयास किये और जातिवाद तथा साम्प्रदायिकता से उत्पन्न होने वाली सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिये भी प्रयास किये। उन्होंने समाज के कमजोर वर्गों की स्थिति को सुधारने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

श्री विजय पाल सिंह का 73 वर्ष का आयु में 6 मई, 1996 को जिला अस्पताल, मुजफ्फरनगर में निधन हो गया था।

हमें इन सहयोगियों के निधन का गहरा दुख है और मुझे विश्वास है कि सभा शोकसंतप्त परिवारों को हमारी संवेदनाएं भेजने में मेरा साथ देगी।

प्रधान मंत्री (श्री एच.डी. देवेगौड़ा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सभा में आपके द्वारा प्रस्तुत किए गये शोक संबंधी संकल्प से अपने आपको संबद्ध करते हुए आज डा. नीलम संजीव रेड्डी को श्रद्धांजली अर्पित करने वाले प्रस्ताव से स्वयं को संबद्ध करना मेरा दुःखद कर्तव्य है।

डा. नीलम संजीव रेड्डी के निधन से देश ने एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, एक सुयोग्य प्रशासक, एक स्वच्छ छवि वाले राजनीतिज्ञ और एक वरिष्ठ देशभक्त खो दिया है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी के आह्वाहन पर उन्होंने उच्च शिक्षा सहित अपना सभी कुछ बलिदान कर दिया था और अपने प्रारंभिक युवा काल में स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और कई वर्षों तक जेल में रहे। वे किसान परिवार से संबद्ध थे। अपने बलिदान, कठोर परिश्रम और गुणों के आधार पर, वे आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री बने। मुख्य मंत्री के रूप में, उन्होंने कई परियोजनाएं प्रारम्भ की जिनसे बाद में कृषि का चहुमुखी विकास हुआ। वे केवल एक प्रगतिशील प्रशासक ही नहीं थे बल्कि एक असाधारण रूप से संवेदनशील राजनीतिज्ञ थे। वे एक राजनेता थे और सार्वजनिक जीवन में उच्च स्तरों से प्रतिबद्ध थे।

उन्होंने विभिन्न पदों पर कार्य करके देश की सेवा की। सर्वप्रथम वे मद्रास विधान सभा के सदस्य बने। तत्पश्चात् वे भारत को संविधान सभा के सदस्य बने। बाद में वे आंध्र प्रदेश के मंत्री तथा मुख्य मंत्री बने। वे श्री लाल बहादुर शास्त्री के मंत्रिमंडल में और बाद में श्रीमती इन्दिरा गांधी के मंत्रिमंडल के सदस्य थे। एक योग्य प्रशासक के रूप में, उन्होंने केन्द्र सरकार में कई मंत्रालयों को परिपक्व मार्ग दर्शन दिया। संसदीय कौशल के कारण ही उन्हें चौथी लोक सभा का अध्यक्ष चुना गया था। जिस पद पर उनको व्यापक प्रशंसा मिली। उनकी प्रतिभा के कारण ही वे मार्च, 1977 में पुनः सर्वसम्मति से लोक सभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और फिर देश के सर्वोच्च पद पर सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

मुझे उनको कई वर्षों तक निकट से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनके अंतिम वर्षों के दौरान, जब वे बंगलौर रहने लगे, तो भी मुझे उनके निकट सम्पर्क में आने का अवसर मिला था। आज जब मैं उनके बारे में बात करता हूं तो, उनके साथ मेरी संबद्धता की कई यादें दिमाग में आ रही हैं। उनके जाने से भारत के सार्वजनिक जीवन को क्षति हुई है, लेकिन वे सदैव हम सभी के लिए सार्वजनिक जीवन का एक अनुकरणीय उदाहरण रहेंगे।

मैं हमारे कुछ निवर्तमान साथियों के निधन पर भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं।

श्री राम चरण चौथी लोक सभा के सदस्य थे, जिनकी सामाजिक कार्य और दलितों के उत्थान में विशेष रूचि थी।

श्री वाल्मीकि चौधरी हमारे प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के साथ अपनी निकट संबद्धता के लिए प्रसिद्ध है। उन्होंने डा. राजेन्द्र प्रसाद से संबंधित दस्तावेजों को एकत्रित करके और उनका संकलन करके देश की महत्वपूर्ण सेवा की है।

हम श्री डी.डी. पुरी, श्री पी.ए. एंटनी और श्री विजय पाल सिंह के निधन पर भी शोक व्यक्त करते हैं। श्री पुरी किसानों और चीनी उद्योग के हितों से निकट रूप से संबद्ध थे, श्री पी.ए. एंटनी एक बुद्धिजीवी और एक प्रतिष्ठित खिलाड़ी थे।

श्री विजय पाल सिंह की श्रमिक वर्ग, किसानों और युवा वर्ग में विशेष रूचि थी और वे उनके कल्याण के प्रति समर्पित थे।

मैं डा. नीलम संजीव रेड्डी और अन्य दिवंगत साथियों के निधन पर राष्ट्र द्वारा और हम सभी द्वारा महसूस की गई व्यक्तिगत क्षति और शोक व्यक्त करता हूं। भगवान उनकी आत्माओं को शांति प्रदान करे।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : अध्यक्ष महोदय, नए सदस्यों का शुभागमन और दिवंगत सदस्यों का पुण्य-स्मरण कुछ क्षणों के अन्तर से घटने वाली दो घटनाएं इस सदन की पूरी कहानी कह देती हैं, जीवन की भी पूरी कहानी कह देती है।

डा. नीलम संजीव रेड्डी के निधन से एक युग का अन्त हो गया। वर्तमान को अतीत से जोड़ने वाली एक सशक्त कड़ी टूट गई है। एक महारथी हमारी बीच में से उठ गया। वे गांव में जन्मे, किसान के घर पले, स्वतंत्रता से संग्राम में जूझे। कई बार जेल गए और जब देश स्वतंत्र हो गया तो राष्ट्र के निर्माण में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वे विधान सभा में रहे, संविधान परिषद के सदस्य थे जैसा अभी कहा गया। लोक सभा में रहे, राज्य सभा में रहे। हर जगह उन्होंने अपनी छाप छोड़ी। उनकी खुरदरी काया के भीतर एक स्नेहपूर्ण हृदय निवास करता था। दो बार वे लोक सभा के अध्यक्ष रहे। मैं एक बार प्रतिपक्ष में था, एक बार सत्ता पक्ष में था। सदन को नियंत्रित करने के लिए वे संविधान, नियमावली, परम्पराएं, इसका ज्यादा सहारा नहीं लेते थे। यद्यपि वे सबसे भली-भांति परिचित थे लेकिन सहज बुद्धि से, अपनी कुशलता से, सबको साथ लेकर चलने की कला से उन्होंने स्पीकर के नाते अपना योगदान दिया।

यह ठीक है कि उनकी गणना विट्ठल भाई पटेल या मावलंकर जी की तुलना में नहीं हो सकती, लेकिन सब का सहयोग लेकर सदन किस तरह से चलाया जा सकता है, यह उनके कार्यकाल में हमने देखा।

मुझे उनके साथ विदेश जाने का भी मौका मिला। एक बार एक देश में हमारे प्रतिनिधि-मंडल के शिष्टाचार में थोड़ी कमी रह गई।

भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। संसद के सदस्य जब प्रतिनिधि-मंडल के रूप में जाते हैं तो सारे देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। डा. रेड्डी हमारे नेता थे। उन्होंने बड़ी दृढ़ता से, मगर बड़ी शालीनता से, जो मेजबान थे, उनके ध्यान में यह लाया और फिर मेजबान ने उसका परिमार्जन किया।

कृतज्ञ देश ने उनकी जीवन भर की सेवाओं के लिए उन्हें गणतंत्र का राष्ट्रपति चुना। वह इससे पहले भी चुने जा सकते थे, 1977 के पहले भी चुने जा सकते थे। उस विवाद में मैं जाना नहीं चाहता। लेकिन घड़ी की सुई पूरी घूम गई और वह राष्ट्रपति के पद पर सुशोभित हुए। उस समय मैंने देखा, वह गोंडा के एक गांव में गये थे। गरीबों का सम्मलेन था, किसान जुटे थे, वह वहां निमंत्रित थे। राष्ट्रपति के साथ जो ताम-झाम चलता है, हम सब जानते हैं। लेकिन हजारों ग्रामवासी जो उस कार्यक्रम में एकत्रित थे, उनका हृदय द्रवित हो गया, जब डा. रेड्डी ने कहा कि मैं सब गांव वालों के साथ पत्तल में जमीन पर बैठकर खाना खाऊंगा, मैं अलग खाना नहीं खाऊंगा। मेरे खाने की विशेष व्यवस्था नहीं होनी चाहिए। अपने में यह बड़ी चीज थी।

वह जीवन भर जूझे, उन्होंने अनेक उतार-चढ़ाव देखे। राष्ट्रपति बनने के बाद भी उनके कुछ निर्णय ऐसे हुए, जिनकी हमने आलोचना की थी, मगर इसके कारण उनके प्रति हमारे सम्मान में किसी तरह की कमी नहीं आई। आज उनके चले जाने से सार्वजनिक जीवन में एक बड़ा अभाव पैदा हो गया है।

और भी साथियों के निधन पर हम शोक व्यक्त कर रहे हैं। मुझे सब के साथ इस सदन में या दूसरे सदन में रहने का मौका मिला है।

श्री वाल्मीकि चौधरी दस साल की उम्र में गिरफ्तार किये गये। उनके लिखे ग्रंथ भावी पीढ़ी के काम आयेंगे। राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री के सम्बन्ध क्या होने चाहिए, किस तरह के मुद्दे उठाये गये थे, उसका भी उन्होंने उल्लेख किया है।

श्री राम चरण जो सुरक्षित सीट से जीते थे, खुर्जा के प्रतिनिधि थे, हम सब लोगों के मित्र थे। अपने क्षेत्र की निरन्तर चिन्ता करते थे।

श्री डी.डी. पुरी संयुक्त पंजाब की स्मृतियां अपने साथ संजोए घूमते थे। लाहौर की कहानियां सुनाते थे। यहां उद्योग से जुड़े थे। उद्योग का दृष्टिकोण बड़े प्रभावी ढंग से रखते थे।

मजदूरों की समस्याओं को भी हल करने के प्रयास में लगे रहते थे। त्रिचूर से निर्वाचित श्री एंटनी कमेटीज में बड़े सक्रिय थे। जहां-जहां जिस कमेटी में उन्हें काम करने का अवसर मिला, उन्होंने अपनी छाप छोड़ी। श्री विजय [illegible] कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे। पश्चिमी उत्तर प्रदेश का [illegible] था। कैराना किसानों से जुड़े थे, जन-समस्याओं से सम्बद्ध थे। अपने क्षेत्र में उनका महत्वपूर्ण स्थान था।

पुरानी पीढ़ी के लोग एक-एक करके जा रहे हैं। हम सब उनके निधन से दुःखी हैं। अध्यक्ष महोदय, आपने जो शोकोद्गार प्रकट किये, प्रधान मंत्रीजी ने अपनी शब्द उसमें मिलाये, मैं भी अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से डा. नीलम संजीव रेड्डी और सब दिवंगत साथियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। हमारी संवदेना उनके परिवार तक पहुंचा दीजिये, यह आपसे अनुरोध करता हूं।

[अनुवाद]

श्री पी.वी. नरसिंह राव (बरहामपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रधान मंत्री द्वारा तथा विपक्ष के नेता द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं से स्वयं को संबद्ध करता हूं।

मुझे विशेष रूप से संजीव रेड्डी के निधन पर दुःख हुआ है। देश को उनकी सेवाओं, उनके स्वतंत्रता सेनानी होने, उनके द्वारा प्रतिष्ठा और जिम्मेदारी के कई पदों पर कार्य करने, के बारे में जो कुछ कहा गया है उसके अतिरिक्त उनके साथ मेरे निजी संबंधों का एक सम्पूर्ण अध्याय मेरे पास है। मेरे जीवन में बहुत सी चीजें उनकी ही देन है। 1962 में उन्होंने मुझे पहली बार अपनी मंत्रि परिषद में मंत्री बनने का अवसर प्रदान किया। जब कभी मैंने अच्छा कार्य किया तो उन्होंने उसकी प्रशंसा की। इसे सिद्ध करने के लिए मुझे कई उदाहरण याद है। वे मुझसे बहुत प्यार करते थे। उन्होंने मुझे अपने जिला अनन्तपुर का प्रतिनिधि बनाया, जो देश में सबसे कम विकसित जिला है, जैसा कि हम सभी जानते हैं। वे पेन्नार नदी, जो अनन्तपुर में से बहती है, के बारे में प्रायः कहा करते थे कि इस नदी में रेत बहती है पानी नहीं। अनन्तपुर में अवर्णनीय गरीबी का वर्णन करने के लिए उनके पास इस तरह के कई हल्के मजाक होते थे। मुझे अनन्तपुर में कुछ योजनाओं को तैयार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जिनमें कई दशकों का समय लगा है। उनमें से वास्तव में उनमें से अब कुछ फलदायक सिद्ध हो रही है। और, जब कभी बंगलौर में मेरी डा. संजीव रेड्डी से मुलाकात होती थी, तो वे हमेशा उनके मंत्रिमंडल में एक मंत्री के रूप में मैंने जो कुछ प्रारम्भ किया था उसको और तब से दशकों के बाद क्या किया जा रहा है, उसे याद करते थे।

वे बहुत ईमानदार व्यक्ति थे। उनकी ईमानदारी दक्षिण भारत में उदाहरण स्वरूप थी। एक उदाहरण जिसकी बहुत चर्चा हुई और जो पूर्णतया सत्य था, वह उस समय की है जब वे पुराने मद्रास राज्य में सार्वजनिक कार्य विभाग के मंत्री थे। एक व्यक्ति उनके बहुत प्रिय मित्र के एक बंद पत्र के साथ उनके पास पहुंचे। उन्होंने वह पत्र लिया। उन्होंने उसे खोला नहीं। केवल यह कहा, मुझे पता है कि इस पत्र में

क्या है। मुझे पता है कि आप एक ठेकेदार हैं। या तो इस पत्र को अपनी सुरक्षा के लिए वापस ले जाइए, अथवा यदि आप चाहते हैं कि मैं इसे खोलूं, तो आपको मेरे द्वारा आपके विरूद्ध जाने का खतरा उठाना पड़ेगा, सिर्फ इसलिए क्योंकि आप यहां एक सिफारिश लेकर आये हैं। उस व्यक्ति ने बिना हिचक उसे वापस ले लिया। इस घटना से दक्षिण में कई लोग परिचित हैं, विधायक और अन्य लोग, और बहुत हद तक यह उनकी दृढ़ता के लिए जानी जाती है। जिसे वह सही समझते थे, उससे समझौता न करने के लिए वे देश भर में प्रसिद्ध थे।

वे कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे थे। शायद यह उनके लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण समय था क्योंकि प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू थे। जब प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू देश और कांग्रेस के शीर्षस्थ नेता थे, तो उस समय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में कार्य करना वास्तविक परीक्षा थी। मैं अन्तर्विरोध के डर के बिना यह कह सकता हूं कि डा. संजीव रेड्डी सही अर्थों में नेहरू जी के समान नेता सिद्ध हुए न कि उनके अधीनस्थ। यद्यपि वह संबंध बहुत अनुदेशी था, हम कुछ सीखने का प्रयास करते हैं, हम उस संबंध के अन्दरूनी घालमेल को देखने का प्रयास करते हैं। और फिर पुनः, वे आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री बने। भारत के राष्ट्रपति के रूप में, उन्होंने दिखाया कि उन्हें निर्दिष्ट स्थान पर हस्ताक्षर करने की आवश्यकता नहीं है। उनमें यह कहने का साहस था कि उनके विनम्र मतानुसार जो कुछ मंत्रिमंडल द्वारा प्रस्तावित किया जा रहा था वह सही प्रतीत नहीं होता, मंत्रिमंडल उस पर पुनः विचार करे। और इन अधिकांश मामलों में मैं मध्यस्थ रहता था। इसलिए, मुझे जानकारी है कि कैसे क्या हुआ। दूसरी ओर प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी थीं, मैं उनके मंत्रिमंडल में एक मंत्री था। इन घटनाओं, जिनका शायद इतिहास के पन्नों में कोई स्थान नहीं है, की केवल उन व्यक्तियों को जानकारी है जो इनमें से गुजरे हैं और जिन्होंने बहुत बारीकी से इनका अध्ययन किया है। मैं उनमें से एक था और मुझे इन अनुभवों से लाभ हुआ है और मैं यह कहूंगा कि यह मेरी निजी क्षति है और डा. संजीव रेड्डी के निधन से मैं यह महसूस करता हूं कि मैंने कुछ खो दिया है। मैं जब भी बंगलौर जाता था, मैं उनसे अवश्य मिलता था। और वे समस्त परीदृश्य से लुप्त हो गये हैं। उनकी देश और विश्व में हो रही छोटी-छोटी घटनाओं में बहुत रूचि थी।

जब मैं विदेश मंत्री बना, तब विदेश मंत्रालय में उनकी गहरी रूचि थी। मैं उन्हें समस्यायें बताता था और उन्होंने अपनी समझ-बूझ से ऐसी चीजें सुझाई, जो उनके अभाव में संभवतः विदेश मंत्रालय में कभी नहीं होती। उनमें से कुछेक मुझे मालूम हैं। अतः उनसे हम अत्यधिक लाभान्वित हुए थे। और मैं उन्हें, उनके व्यक्तित्व और उनके साथ अपने संबंधों को जीवनपर्यन्त याद रखूंगा।

अन्य साथी जो हमें छोड़ गये हैं, वे भी अपने-अपने क्षेत्रों में समान रूप से विख्यात थे। वाल्मीकि चौधरी मेरे परम मित्र थे। लगभग हर महीने वे मुझसे मिलते थे। और उनके और मेरे बीच उनकी रचनाओं, विशेषकर डा. राजेन्द्र प्रसाद के दिनों से संबंधित लेखों के बारे में गहन चर्चाएं होती थी। वह हमारे प्रिय सहयोगी थे और कलम के धनी थे। उनके निधन से साहित्य जगत को भारी क्षति हुई है।

मैं, अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदनाएं प्रकट करता हूं। ईश्वर दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : अध्यक्ष महोदय, सदन में माननीय अध्यक्ष महोदय तथा अन्य आदरणीय नेताओं ने जो विचार अभिव्यक्त किए हैं, मैं स्वयं को उनसे संबद्ध करता हूं। हम अपने राष्ट्रपति तथा अपने अन्य सभी दिवंगत साथियों के निधन पर गहन शोक प्रकट करते हैं।

महोदय, 1977 में जब डा. नीलम संजीव रेड्डी थोड़े समय के लिए इस सदन के अध्यक्ष थे, तब मैं इस सभा का सदस्य था। श्री वाजपेयी जी ने जो कुछ कहा है, उससे मैं पूर्ण रूप से सहमत हूं अर्थात् अध्यक्ष के रूप में उनके सामने आने वाली समस्याओं को वह जितनी दक्षतापूर्वक सुलझाते थे, नियमों और प्रक्रियाओं के बारे में वे उतने आग्रही नहीं थे।

महोदय, वह एक जननायक और स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने जिस पद पर भी कार्य किया, बड़े उत्कृष्ट ढंग से कार्य किया, और मुझे विश्वास है कि अपनी पदावधि के दौरान, वे जिस पद पर भी रहे, उन्होंने सर्वसम्मति की संस्कृति को विकसित किया जिससे उन्हें स्थिति को सामान्य बनाने और जो कुछ भी वे प्राप्त करना चाहते थे, उसे प्राप्त करने में हमेशा मदद मिली। महोदय, राष्ट्रीय जीवन में उनके जैसे नेता की क्षतिपूर्ति कर पाना नितांत कठिन है। उन्होंने इस देश के सर्वोच्च पद सहित सभी महत्वपूर्ण पदों पर उत्कृष्ट कार्य किया।

महोदय, हम उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं और मैं जानता हूं कि उनके निधन से अपूरणीय क्षति हुई है।

मैं इस सभा के अन्य विख्यात सदस्यों के निधन पर भी शोक व्यक्त करता हूं और महोदय, आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी संवेदनाएं शोक संतप्त परिवार के सदस्यों तक पहुंचा दी जाएं।

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला (संगरूर) : अध्यक्ष महोदय, मैं डा. नीलम संजीव रेड्डी और इस सभा के अन्य पांच पूर्व सहयोगियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने में इस सभा के अन्य विद्वान सदस्यों के साथ अपने को संबद्ध करता हूं।

मुझे कुछ समय तक डा. नीलम संजीव रेड्डी के साथ काम करने का अवसर मिला। वह एक कृषक परिवार में पैदा हुए और संपूर्ण

जीवन हृदय से कृषक ही रहे। वह जब कभी भी मुझे मिले, वह मुझसे कृषि की बातें किया करते थे- यह कृषि के प्रति उनके रूझान को दर्शाता है। मैं सोचता था कि ऐसा इसलिए है कि उस समय मैं वह विभाग संभाल रहा था।.लेकिन ऐसा नहीं था। कृषि के प्रति उनका हार्दिक लगाव था। हालांकि वह भारत के राष्ट्रपति थे, वास्तव में वह एक किसान थे। वह महत्वपूर्ण पदों पर पहुंचे क्योंकि वह अपने लोगों से प्यार करते थे। उन्होंने लोगों की सेवा की और लोग भी उन्हें प्यार करते थे।

वह आंध्र प्रदेश विधान सभा के सदस्य बने। वह बार बार विधायक चुने गये; वह मंत्री बने और मुख्य मंत्री बने। तत्पश्चात् वह उन्हीं लोगों द्वारा संसद के लिए चुन लिये गये और केवल एक बार नहीं बल्कि अनेकों बार। वह यहां मंत्री बने; और अध्यक्ष पद तक पहुंचे। उन्होंने सभी पदों पर बड़ी योग्यता से कार्य किया। उन्होंने संभवतः देश के सर्वोच्च पद अर्थात् भारत के राष्ट्रपति के पद को सुशोभित किया।

वर्ष 1977 में, जब मैं रोम में खाद्य एवं कृषि संगठन सम्मेलन में भाग ले रहा था, उस समय मुझे वहां एक संदेश मिला कि आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों में भयंकर समुद्री तुफान आया हुआ है। और उसमें जन-जीवन का काफी नुकसान हुआ है। मैं तत्काल वापिस आ गया और जब मैं दिल्ली पहुंचा, तो मुझे एक संदेश मिला कि राष्ट्रपति महोदय, उस क्षेत्र का दौरा कर रहे हैं और मुझे भी उनके साथ जाना है। अतः, मैं तटीय क्षेत्रों में संजीव रेड्डी जी के साथ गया। हमें वहां कई मील पैदल चलना पड़ा और वहां का दृश्य बड़ा भयावह था। सड़क के आसपास तथा खेतों में मानव तथा जानवरों के कंकाल बिखरे पड़े थे। यहां तक कि हमने भूमि से लगभग दस फुट ऊपर विद्युत की तारों से कुछ शरीर लटके हुए देखे। उस क्षेत्र में पानी इतना अधिक चढ़ गया था कि समुद्र ने लगभग 20 किलोमीटर तक की भूमि को जल से डुबो दिया था और उसके बाद पानी का स्तर घटने लगा था। अतः, जन-जीवन की काफी हानि हुई थी। उस समय कुछ सभाएं की गई, कैंप लगाये गये थे। हमने एक कैंप का दौरा किया और ऐसे आदमियों, महिलाओं और बच्चों को देखा जिनके शरीर पर वस्त्र नाममात्र का था। कुछ महिलायें अर्द्ध-नग्न थी और भूखी मर रही थी। संजीव रेड्डी की आंखों में आंसू आ गये और उन्होंने मुझे कहा, "बरनाला जी, आप उनके लिए कुछ कपड़े और भोजन की व्यवस्था तत्काल करें। मैंने जवाब दिया कि शाम तब सभा व्यवस्था की दी जायेगी और अगले दिन जब मैंने उन्हें बताया कि उस क्षेत्र के लिए कपड़े और भोजन की व्यवस्था कर दी गई है, तो वह बड़े खुश हुए। उनका हृदय कोमल था। इतने उच्च पद पर आसीन होते हुए भी उनका हृदय लोगों के लिए रोता था और उन्हें लोगों की चिंता थी।

बाद में एक समय ऐसा आया, जब चौधरी चरण सिंह ने त्यागपत्र दे दिया क्योंकि सभा में उनके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पेश किया गया था। इसके कुछ दिन बाद श्री संजीव रेड्डी ने मुझे राष्ट्रपति भवन बुलाया और कहा कि उनका एक अंतरिम राष्ट्रीय सरकार के गठन का विचार है और तत्पश्चात् उन्होंने आश्चर्यजनक रूप से मुझे बताया कि उसका नेतृत्व मुझे करना है। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा कि मैं इसके योग्य नहीं हूं और पूछा की उन्होंने इसके लिए मुझे ही क्यों चुना। तब उन्होंने कहा, मैं जानता हूं कि आपमें कुछ ऐसे गुण हैं,जो अन्य लोगों में नहीं है आप का व्यक्तित्व निर्विवाद है।" अतः, महोदय, मेरे पास इस महान व्यक्ति की मधुर यादें संचित हैं जिसने विभिन्न पदों पर भारत की सेवा की और मैं उनके निधन पर संवेदना व्यक्त करता हूं।

श्री डी.डी. पुरी पंजाब से थे, वह एक विधायक भी थे, और जब वह संसद में आये तो मुझे भी संसद सदस्य बनने का मौका मिला। वह राष्ट्रवादी विचारों वाले एक समर्पित व्यक्ति थे जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान दिए और बाद में राज्य और देश की भरपूर क्षमता से सेवा की। मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से अन्य सदस्यों के साथ अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं।

श्री चित्त बसु (बारसाट) : महोदय मैं, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा. नीलम संजीव रेड्डी और इस सदन के अन्य आदरणीय सदस्यों, जो अब हमारे बीच नहीं रहे के निधन पर इस सदन के नेता, विपक्ष के नेता तथा इस सभा के अन्य आदरणीय सदस्यों की तरह गहरा दुःख एवं संवेदनाएं व्यक्त करता हूं।

महोदय, डा. नीलम संजीव रेड्डी राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के दिग्गज थे; वह एक कुशल प्रशासक तथा एक महान राजनीयज्ञ थे और उनमें ऐसी विशेषताएं थी जो बहुत कम लोगों में देखने को मिलती है। जिस कुर्सी पर आज आप बैठे हैं, उन्होंने उस कुर्सी को भी सुशोभित किया। उन्होंने इस सदन के संचालन पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने अनेक निर्णय देकर कुछ नई महत्वपूर्ण परम्पराएं तथा परिपाटियां शुरू की। जब वे अध्यक्ष पद पर थे तो मुझे इस सदन में कार्य करने का मौका मिला। महोदय, मैंने उन्हें हमेशा एक मार्गदर्शक, दार्शनिक तथा प्रेरक के रूप में पाया, जब नये सदस्यों को कुछ कठिनाई होती थी तो वह उन्हें मार्गदर्शन जानकारी और आवश्यक निर्देश देने के लिए अपने कक्ष में हमेशा उपलब्ध होते थे। इस सदन में एक नये सदस्य के रूप में मैं उनका ऋणी हूं। इस महान देश के राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन बड़ी कुशलता से किया। इस देश की जनता उन्हें कभी भुला नहीं सकती। मैं दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि अर्पित करने में आपका, इस सदन के नेताओं और अन्य आदरणीय सदस्यों का समर्थन करता हूं। मैं आपसे अपनी और

से तथा अपने दल की ओर से अन्य शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना संदेश भेजने का अनुरोध करता हूं।

श्री सुरेश प्रभु (राजापुर) : अध्यक्ष महोदय, यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि डा. नीलम संजीव रेड्डी जैसे विख्यात व्यक्ति का निधन हो गया है। मैं, आपके साथ अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं।

उन्होंने अपने राजनैतिक जीवन की बड़ी साधारण शुरूआत की और उच्च पदों और अंत में भारत के राष्ट्रपति के पद पर पहुंचने के बाद भी वे विनम्र बने रहे। वह मुख्य मंत्री रहे, केन्द्रीय मंत्री भी बने, इस सभा के अध्यक्ष भी बने और भारत के राष्ट्रपति भी बने। भारतीय राजनीति इस बात का गवाह है कि उनका राष्ट्रपतित्व काल अत्यंत उथल-पुथल भरा रहा। इसके बावजूद उन्होंने अपने कर्तव्यों का निर्वहन बखूबी किया। यह उनकी राजनीतिक सूझबूझ का सबूत है। मैं उन दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्तियों में से हूं जो उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित नहीं थे। फिर भी मैं उनकी प्रशसा करता हूं। वे सभी के साथ अच्छी तरह मिलते थे। हम उनके शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति तथा इस सभा के अन्य जिन पांच सदस्यों का निधन हुआ है उनके परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करते हैं।

श्रीमती गीता मुखर्जी (पसंकुरा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रधान मंत्री, सदन के नेता, विपक्ष के नेता और अन्य आदरणीय सदस्यों जिन्होंने डा. नीलम संजीव रेड्डी के बारे में अपनी भावनायें व्यक्त की है, का समर्थन करती हूं। अत्यंत महत्वपूर्ण बातें पहले ही कही जा चुकी है, मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से उन सब बातों का समर्थन करती हूं। मैं एक अन्य बात कहना चाहूंगी। वह एक राजनीतिज्ञ ही नहीं बल्कि एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे वह बहुत दयालु थे और उन्होंने इतने उच्च पद पर रहते हुए भी अपनी जीवन शैली कभी नहीं बदली।

आज के भारत में यह एक ऐसी विशेषता है जिसकी सभी को प्रशंसा करनी चाहिए और साथ ही उसका अनुकरण करने की कोशिश करनी चाहिए।

महोदय, एक बहुत ही साधारण शुरूआत करते हुए इतने उच्च पद पर उन्होंने बहुत कुशलता से कार्य किया। उनके निधन से देश ने अपना एक महान सपूत खो दिया है और यह कमी हमेशा बनी रहेगी। मैं उनके परिवार के प्रति अपनी शोक संवेदनाएं प्रकट करती हूं। मैं आपसे अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से शोक संतप्त परिवार तक हमारा संवेदना संदेश पहुंचाने का अनुरोध करती हूं। मैं इस सदन के अन्य माननीय सदस्यों श्री रामचरण, श्री वाल्मीकि चौधरी, श्री डी. डी. पुरी, श्री पी.ए. एंटनी और श्री विजय पाल सिंह को भी श्रद्धाजलि अर्पित करती हूं। मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि इस सदस्यों के शोक संतप्त परिवारों को हमारी ओर से गहरी शोक संवेदना प्रेणित की जाए जो कि एक समय हमारे साथ थे और अब हमारे बीच नहीं है।

श्री जी.एम. बनातवाला (पून्नानी) : अध्यक्ष महोदय, हम भूतपूर्व राष्ट्रपति डा. नीलम संजीव रेड्डी के दुःखद निधन पर प्रकट की गई भावनाओं का समर्थन करते हैं। निःसंदेह वह एक विचारवान और सुहृदय व्यक्ति थे। वह एक विख्यात स्वतंत्रता सेनानी थे और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी राष्ट्र के निर्माण में उनका महान योगदान रहा।

महोदय, मंत्री पद पर इस सभा के अध्यक्ष के पद, संविधान सभा के सदस्य के रूप में और हमारे गणराज्य के राष्ट्रपति, के रूप में, वह जिस पद पर भी रहे, उन्होंने उसे गरिमा तथा सम्मान प्रदान किया। उनके निधन से वास्तव में बहुत बड़ी राष्ट्रीय क्षति हुई है और उस शोक को प्रकट करने के लिए हमारे पास पर्याप्त शब्द नहीं हैं। उनके निधन के दुखद समाचार से राष्ट्र शोक में डूब गया है।

यह पंक्तियां उच्च कोटि के व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों के लिए हैं और पूर्व के उर्दू शायर डा. अल्लाना इकबाल ने ऐसे उच्च व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों के निधन पर कहा था:

[हिन्दी]

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पर रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदा वर पैदा।।

[अनुवाद]

हम इस राष्ट्रीय क्षति पर शोक प्रकट करते हैं। डा. नीलम संजीव रेड्डी समय की रेत पर अपने पद चिन्ह छोड़ गये हैं। उन्हें लम्बे समय तब याद किया जाएगा। हम उस सदन के अन्य सदस्यों, जिनका पहले उल्लेख किया गया है कि निधन पर भी शोक व्यक्त करते हैं। हम शोक संतप्त परिवारों के प्रति भी अपनी गहरी शोक संवेदना व्यक्त करते हैं।

श्री सनत कुमार मंडल (जयनगर) : महोदय, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा. नीलम संजीव रेड्डी एक महान नेता थे जिन्होंने विभिन्न पदों पर रहकर देश की सेवा की।

मध्याह्न 12.00 बजे

उनके निधन से देश ने एक महान देश भक्त, एक कुशल प्रशासक और विशिष्ट राजनीतिज्ञ खो दिया है। उनकी क्षति अपूरणीय है। मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से डा. नीलम संजीव रेड्डी तथा इस सदन के अन्य दिवंगत सहयोगियों के शोक संतप्त परिवारों के प्रति गहरी शोक संवेदना व्यक्त करता हूं।

श्री एन.पी.एन. सोम्बू (मद्रास उत्तर) : अध्यक्ष महोदय, डा. नीलम संजीव रेड्डी के निधन पर सदन के अन्य नेताओं द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं से मैं अपने आप को सम्बद्ध करता हूं। पूर्व राष्ट्रपति, डा. नीलम संजीव रेड्डी स्वतंत्रता संग्राम के वरिष्ठ सेनानी अब हमारे बीच नहीं हैं। वह इस देश में आजादी का आंदोलन चलाने वाले अग्रणी नेताओं में से एक थे।

वह सच्चे गांधीवादी थे, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी, जिसके लिए उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्होंने देश के विकास में गहन रूचि दिखाई। जैसा कि आपने कहा है, वह 1977 और 1982 के बीच भारत गणराज्य के राष्ट्रपति रहे। अपने कार्यकाल में उन्होंने श्री मोरारजी देसाई, श्री चरण सिंह तथा श्रीमती इन्दिरा गांधी तीन प्रधान मंत्रियों को शपथ दिलाई। उनके सुमधुर व्यवहार की वजह से हरेक उनकी सराहना करता था तथा उन्होंने अपने इस उच्च पद के अनुरूप गरिमा एवं महानता को बनाये रखे। पूर्व राष्ट्रपति एक सफल मुख्य मंत्री तथा एक प्रमुख आर्थिक विभाग अर्थात् इस्पात मंत्रालय के प्रभारी के रूप में केन्द्रीय मंत्री भी रहे। वह इस माननीय सदन के पीठासीन अधिकारी थे। अध्यक्ष के रूप में उन्होंने कभी भी नियम पुस्तिका की सहायता नहीं ली और सभी वर्गों को संतुष्ट करके सदन चलाया उन्होंने सदन की कार्यवाही का संचालन बिना पक्षपात किये मेल-मिलाप एवं विनोद प्रियता की भावना से किया। उनमें मंत्र मुग्ध करने वाली एक ऐसी विशेषता थी कि वह किसी गम्भीर टीका टिप्पणी से उत्पन्न स्थिति को भी बड़ी आसानी से सम्भाल लेते थे। सरकारी नीतियों का बखान करने में वह स्पष्ट एवं सीधी अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया करते थे।

महोदय, मैं गर्वपूर्वक यह कहना चाहता हूं कि वह हमारे संयुक्त मद्रास राज्य की विधान सभा के भी सदस्य रहे। वह हृदय से सच्चे गांधीवादी थे। एक बार उन्होंने यह कहा था कि "गांधी जी ने हमें बुराई के बदले में भलाई करना सिखाया है, हमें अपने तौर-तरीकों का त्याग क्यों कर देना चाहिए!" राष्ट्रपति के रूप में सफल रहने वाले श्री रेड्डी पर गांधीजी एवं पंडितजी की विचारधारा का प्रभाव था।

डा. संजीव रेड्डी के निधन से इस श्रृंखला की एक और महत्वपूर्ण कड़ी टूट गई है।

महोदय, मैं अपनी डी.एम.के. पार्टी की ओर से, दिवंगत नेता को सदन द्वारा दी गई श्रद्धांजलि से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं तथा अन्य दिवंगत संसद सदस्यों के प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि प्रकट करता हूं।

श्री माधव राव सिंधिया (ग्वालियर) : अध्यक्ष महोदय, इस सदन में डा. संजीव रेड्डी के प्रति आज जो श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही है उससे हम अपने आपको सम्बद्ध करते हैं।

मुझे डा. संजीव रेड्डी को पहली बार जब 1967 में वह अध्यक्ष बने थे, तभी से जानने का विशेष अवसर मिला है तथा बाद में 1977 में और इसके भी बाद भारत के राष्ट्रपति के रूप में भी जानने का मौका मिला है।

महोदय, डा. रेड्डी एक ऐसे व्यक्ति रहे हैं, जिन्होंने सदन में युवाओं को हमेशा उत्साहित किया था। मुझे विश्वास है कि हमारे वर्तमान अत्यंत युवा अध्यक्ष इस परम्परा को बनाए रखेंगे। वह कहा करते थे कि अध्यक्ष दिखाई तो देना चाहिए, परन्तु उसकी आवाज नहीं आनी चाहिए। मैं नहीं जानता कि हम आपको इस उक्ति पर किस सीमा तक अमल करने देंगे। डा. संजीव रेड्डी एक कृषक परिवार में पैदा हुए थे तथा वह पूज्य बापूजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए। बाद में वह दल के संगठन के अनेक उच्च पदों पर बैठे। वह केन्द्रीय मंत्री एवं मुख्य मंत्री भी बने। वह ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने पहली बार राष्ट्रपति का चुनाव हार जाने के बाद दूसरी बार में जीत हासिल की। इससे पता चलता है कि वह कितने दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति थे। मुझे याद है 1969 में, जब मैंने पहली बार राजनीति में प्रवेश किया था, इस कोलाहल पूर्ण राष्ट्रीय राजनीति का स्वयं गवाह हूं।

डा. नीलम संजीव रेड्डी के निधन से हमने एक सच्चे देश भक्त और देश के सपूत को खो दिया है। महोदय, मैं उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करना चाहता हूं। मैं अन्य सभी दिवंगत साथियों के परिवारों को भेजी जाने वाली संवेदना में भी अपने आपको सम्बद्ध करता हूं।

[हिन्दी]

श्री नारायण दत्त तिवारी (नैनीताल) : श्रीमन्, मैं आपसे अनुज्ञा चाहता हूं कि मैं सम्मानित प्रधान मंत्री जी, नेता विरोधी दल, नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस व अन्य दलों के नेताओं ने प्रातः स्मरणीय श्री नीलम संजीव रेड्डी जी वे अन्य दिवंगत आत्माओं के प्रति जो संवेदना के शब्द यहां व्यक्त किये हैं, विचार व्यक्त किये हैं, उनसे अपने को और अपने दल का संबद्ध करूं। माननीय श्री नीलम संजीव रेड्डी जी की मृत्यु से, उनके देहावसान से, उनके संस्मरण से हम केवल उनको ही श्रद्धांजलि अर्पित नहीं करते, बल्कि पूरे इतिहास का स्मरण करते हैं। हम स्मरण करते हैं स्वतंत्रता संग्राम के उस महान अभियान का जिसमें उन्होंने एक सैनिक के रूप में भाग लिया। हम स्मरण करते हैं उन पीढ़ियों का, उन दशकों का, जब कि "भारत छोड़ो आन्दोलन" के बाद संविधान निर्मात्री परिषद के माध्यम से उन्होंने भारत के संविधान की संरचना में अपना योगदान दिया। तत्पश्चात् उन्होंने अपनी प्रशासनिक सूझबूझ, अपनी दृढ़ता और अपनी कर्मठता का परिचय शासन के विभिन्न अंगों में और पार्टी के संगठनात्मक अंगों में योगदान

करके दिया। वे आज के आंध्र निर्माताओं में से एक हैं। आज आंध्र का जो विकास हुआ है और जिस प्रकार वहां की महान जनता ने भारत के एक अत्यंत प्रौढ़ प्रदेश व अचल होने के नाते जो योगदान दिया, उसमें माननीय श्री संजीव रेड्डी जी का नेतृत्व, उनका मुख्यमंत्रित्व, उनका मंत्रित्व का बड़ा योगदान रहा है। मैंने संजीव रेड्डी जी को देखा है कि संगठनात्मक परिस्थितियों में भी किस दृढ़ता से, संकल्पबद्धता से उन्होंने कार्य किया। विभाजन और एकता के संघर्षपूर्ण दिनों में भी उन्होंने सिद्धांतों के प्रति निष्ठा दिखाई। आज भी हमें उनसे प्रेरणा प्राप्त करनी है कि किस प्रकार हम अपने विचारों में निष्ठा रखते हुए प्रजातंत्र के तरीकों के माध्यम से, सदन के माध्यम से प्रजातंत्र को प्रौढ़ कर सकते हैं। इसके कई उदाहरण माननीय श्री संजीव रेड्डी जी ने अपने जीवनकाल में, अपने राष्ट्रपति शासन काल में और अपने जीवन के अन्य वर्गों में, अपने कार्यों से, अपने कलापों से प्रस्तुत किये। साथ ही जो दूसरे हमारे दिवंगत साथी, जिनके साथ हमें काम करने का अवसर मिला, उन्हें भी हम श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। माननीय श्री विजय पाल सिंह जी, जिनका उल्लेख आपने भी किया और अन्य माननीय नेताओं ने किया, वह किसानों की आवाज थे। जब कभी वह बोलते थे, चाहे वह उत्तर प्रदेश विधान सभा में बोले हों या इस सदन में बोले हों, वह किसानों की आवाज थे। देश भर के गन्ना किसानों के वह नेता माने जाते थे। उनकी साम्यवादी विचारधारा किसान और मजदूरों का प्रतिनिधित्व करती थी। उसी प्रकार श्री डी. डी. पुरी जी जहां उद्योगों की आधुनिकता के प्रबल प्रतिनिधि थे, चीनी उद्योग को आधुनिक बनाना चाहते थे, वहीं वह ऐसे अनोखे उद्योगपति थे कि मजदूरों का भी प्रतिनिधित्व करते थे।

श्री पी.ए. एंटनी की विचार पटुता, उनकी वाकपटुता का भी मुझे थोड़ा अनुभव हुआ था। जब कभी वह संसदीय समितियों में बोलते थे तो अपने विचार-बिन्दुओं के प्रति निष्ठा और अकाट्य तर्कशक्ति से वह पूरी समिति को प्रभावित करते थे।

श्री राम चरण, जिन्होंने खुर्जा संसदीय सीट का प्रतिनिधित्व किया, ने हमेशा गरीब और दलितों की आवाज को यहां उठाया। श्री वाल्मीकि चौधरी की महान सेवाओं के प्रति, जिनका उल्लेख अभी आपने यहां किया, उनकी साहित्यिक अनुभूतियों, को सदैव याद रखा जाएगा।

मेरा आग्रह है कि जब सदन की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार को आप संवेदना प्रेषित करें तो कृपया मेरी विनम्र श्रद्धांजलि और मेरे दल की श्रद्धांजलि भी अभिप्रेषित करने का कष्ट करें।

[अनुवाद]

श्री रमाकान्त डी. खल्लप (पणजी) : अध्यक्ष महोदय, मैं डा. नीलम संजीव रेड्डी और सदन के हमारे अन्य साथियों के निधन पर आपके एवं दूसरे दिवंगत माननीय सदस्यों के साथ संवेदना व्यक्त करने में अपने आपको संबद्ध करता हूं तथा ऐसी ही संवेदना अपनी, अपने दल महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी एवं गोवा की जनता की ओर से प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन का नया सदस्य हूं। मुझे डा. नीलम संजीव रेड्डी का नजदीक से जानने का कोई अवसर नहीं मिला है। लेकिन लगभग दो दशक पहले, जब से मैंने अपना राजनैतिक जीवन शुरू किया है, जब कभी वह कांग्रेस अध्यक्ष एवं भारत के राष्ट्रपति के रूप में गोवा आते थे, तो मुझे उनके मिलने का अवसर मिल जाता था।

महोदय, डा. नीलम संजीव रेड्डी को उनके विभिन्न अच्छे कार्यों एवं उपलब्धियों के लिए हमेशा याद किया जायेगा तथा आगे आने वाले समय में शायद यह देश उनकी प्रतिमा अथवा किसी संस्थान के रूप में विभिन्न स्मारकों का निर्माण करें। उनके सम्मान में मैं आपका ध्यान गोवा में स्थित एक छोटे से स्मारक की ओर दिलाना चाहता हूं जब वह इस देश के राष्ट्रपति थे, तब वह अपनी वापसी यात्रा के दौरान गोवा आए थे तथा उन्होंने गोवा को महाराष्ट्र से जोड़ने वाले एक पुल की कोन-शिला रखी थी। मुझे अत्यंत खेद पूर्वक सभा में यह कहना पड़ रहा है कि अनेक वर्षों का समय बीत चुका है; इस देश में महान नेता विभिन्न पद हासिल कर चुके हैं; इन्दिरा जी, आई और चली गईं; राजीव जी आये ओर चले गये; श्री नरसिंह राव जैसे यशस्वी प्रधान मंत्री भी रहे तथा हाल ही में श्री वाजपेयी जी प्रधान मंत्री रहे और निस्संदेह अब श्री देवेगौड़ा हमारे देश के प्रधान मंत्री हैं। तब भी पुल का निर्माण कार्य पूरा नहीं हुआ। मुझे खेदपूर्वक यह कहना पड़ रहा है कि वह पुल जिसके निर्माण का कार्य तब शुरू हुआ था जबकि डा. नीलम संजीव रेड्डी इस देश के राष्ट्रपति थे अभी भी अधूरा पड़ा है। मेरा इस सभा और विशेष तौर पर वर्तमान सरकार से यह विनम्र निवेदन है कि हम डा. नीलम संजीव रेड्डी जैसे विख्यात व्यक्ति द्वारा शुरू किये गये पुल निर्माण के कार्य को अधूरा नहीं छोड़ सकते। इस संबंध में गम्भीरतापूर्वक कुछ किया जाना चाहिए। यह पुल एक छोटी-सी नदी पर बना है, जिसकी एक सिरे से दूसरे सिरे तक की लम्बाई 500 मीटर से अधिक नहीं हो सकती। मेरे विचार से इस पुल को पूरा करवाने पर एक वर्ष तक की समर्पित कार्य काफी होगा तथा इस पर डा. नीलम संजीव रेड्डी का नाम लिखा जा सकता है। हम गोवा के निवासी डा. नीलम संजीव रेड्डी के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने न केवल राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 17 पर इस पुल के निर्माण का कार्य शुरू करवाया था, बल्कि एक सिंचाई परियोजना भी प्रारम्भ की थी। वह परियोजना पूरी हो चुकी है, लेकिन पुल-निर्माण का कार्य अभी तक पूरा नहीं हुआ है। मैं सदन के दूसरे दिवंगत सदस्यों के शोक संतप्त परिवारों के प्रति भी अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : अब सभा के सदस्य दिवंगत आत्माओं के सम्मान में कुछ क्षण के लिए मौन खड़े होंगे।

अपराह्न 12.14 ½ बजे

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे।

अध्यक्ष महोदय : अब सभा कल, 11 जून, 1996 के पूर्वाह्न ग्यारह बजे पुनः समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 12.15 बजे

तत्पश्चात् लोक सभा मंगलवार, 11 जून, 1996/21 ज्येष्ठ, 1918(शक) के पूर्वाह्न ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।

पी. एल. एस.–48/2/6/96 (इन.)
250

© 1996 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों (आठवां संस्करण) के नियम 379 और 382 के अंतर्गत प्रकाशित और डाटा प्वाईंट, 613, सुनेजा टावर–II, डिस्ट्रिक्ट सैन्टर, जनक पुरी, नई दिल्ली–58 (फोन–5505110) द्वारा मुद्रित।